चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 20.10.2020 पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....3-7.....

हकृवि के वैज्ञानिकों ने किया दावा - सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के वैज्ञानिकों ने एक शोध किया है।

इस शोध के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का उपयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने सब साइलर विकसित करने वाली टीम को बधाई देते हुए कहा कि टीम ने विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया है।

सब साइलर। संवाद

सब साइलर या चिजलर नामक उपकरण के उपयोग से बढ़ सकता है 20-30 प्रतिशत उत्पादन

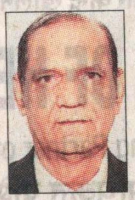

प्रो. समर सिंह।

ऐसे चलाना है खेत में : जमीन के नीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए बिजाई से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फुट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिजलर का उपयोग खेत में अवश्य किया जाना चाहिए। बिजाई के लिए दो से ढाई फुट पर खुड्ड बनाएं। अगर गन्ने में अंतः फसल लेनी हो तो बिजाई तीन फुट पर करें।

ये भी हैं मुख्य कारण : गन्ना भारत और हरियाणा की एक प्रमुख नकदी फसल है, लेकिन खराब प्रबंधन, मृदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मृदा का क्षीण होना, रोग व कीट आदि कई कारण हैं, जो गन्ने की उत्पादकता पर विपरीत असर डालते हैं। रोपण से लेकर कटाई और चीनी मिल या डिस्टलरी तक परिवहन से भारी मशीनरी के यातायात से जुड़े गहन मशीनीकरण से मिट्टी की स्थिति खराब हो गई है।

ऐसे काम करेगा सब-साइलर

जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है, जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है और गन्ना अधिक गिरता है, जिससे पैदावार भी कम हो जाती है। सब-साइलर को विकसित करने वाले सस्य विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबे शोध बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... दैनिक भास्कर .....

दिनांक 20.10.2020 पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....3-5.....

एचएयू के वैज्ञानिकों ने लंबी रिसर्च के बाद तैयार किया सब-साइलर उपकरण

गन्ने की 20 से 30 प्रतिशत बढ़ेगी पैदावार

भास्कर न्यूज | हिसार

गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने रिसर्च की है। रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। उपकरण को एचएयू की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया है। एचएयू वैज्ञानिकों के अनुसार जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है, जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है व गन्ना अधिक गिरता है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है।

हालांकि यह प्रभाव मौसम, स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मृदा संघनन के कारण मिट्टी घनत्व में वृद्धि, छिद्र में कमी, जल भंडारण की क्षमता और जड़ प्रवेश की बाधाएं उत्पन्न होती हैं, जिससे गन्ने की पैदावार कम हो जाती है और किसान जानकारी के अभाव में इस ओर ध्यान नहीं दे पाता।

प्रो. समर सिंह बोले- विवि का गौरव बढ़ाया : एचएयू के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रो. समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है।

जानिए... कैसे करेगा सब-साइलर काम

सब-साइलर को विकसित करने वाले सस्य विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत छेड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई। जमीन के नीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए बिजाई से पहले चिलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चात दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए। बिजाई के लिए दो से अढ़ाई फीट पर खुड्डा बनाएं। अगर गन्ने में अंतः फसल लेनी हो तो बिजाई तीन फीट पर करें।

ये हैं मुख्य कारण

गन्ना भारत और हरियाणा की एक प्रमुख नकदी फसल है, लेकिन खराब प्रबंधन, मृदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मृदा का क्षीण होना, रोग व कीट आदि कई कारण है जो गन्ने की उत्पादकता पर विपरीत असर डालते हैं। रोपण से लेकर कटाई और चीनी मिल या डिस्टिल री तक परिवहन से भारी मशीनरी के यातायात से जुड़े गहन मशीनीकरण से मिट्टी की स्थिति खराब हो गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........हरि. भूमि........

दिनांक 20.10.2020 पृष्ठ संख्या.......1.......कॉलम.......1-4.......

एचएयू वैज्ञानिकों का दावा, उत्पादन 20-30 फीसदी बढ़ेगी

सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है। यह किसानों के उपज बढ़ाने में सहायक होगा।

जमीन की संघनन परत करती है पैदावार कम

जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर सघन परत बन जाती है जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रूक जाती है व गन्ना अधिक गिरता है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। हालांकि यह प्रभाव मौसम, स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मृदा संघनन के कारण मिट्टी घनत्व में वृद्धि, छिद्र में कमी, जल भंडारण की क्षमता और जड़ प्रवेश की बाधाएं उत्पन होती हैं, जिससे गन्ने की पैदावार कम हो जाती है और किसान जानकारी के अभाव में इस ओर ध्यान नहीं दे पाता।

ऐसे करेगा सब-साइलर काम

विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। जमीन के नीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए बिजाई से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चित दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिजलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए।

विवि का गौरव बढ़ाया : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्त्व करने वाले प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक ट्रिब्यून

दिनांक 20.10.2020 पृष्ठ संख्या 7 कॉलम 3-6

हकृवि के वैज्ञानिकों का दावा

नयी मशीन बढ़ाएगी गन्ने की पैदावार

नरेन्द्र ख्यालिया/निस
हिसार, 19 अक्तूबर

गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च के तहत सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का विकसित किया है। यह गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है।

गन्ना विशेषज्ञ वैज्ञानिकों का कहना है कि जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है, जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है। जिसके कारण पौधे की वृद्धि रुक जाती है व गन्ना अधिक गिरता है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। किसान जानकारी के अभाव में इस तरफ ध्यान नहीं दे पाता।

गन्ना उत्पादकता बढ़ाने के लिए हकृवि के गन्ना विशेषज्ञों द्वारा विकसित किया गया यंत्र सब-साइलर। -निस

क्या कहते हैं कुलपति

कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रो. समर सिंह ने कहा कि सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है।

ऐसे काम करेगा सब-साइलर या सिजलर

सब-साइलर को विकसित करने वाले सस्य विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं, जिससे गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई। वैज्ञानिकों का कहना है कि जमीन के नीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए बिजाई से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चित दिशा में चलाना है। 4 साल में एक बार चिजलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए। बिजाई के लिए 2 से अढ़ाई फीट पर खुड्ड बनाएं। अगर गन्ने में अंतः फसल लेनी हो तो बिजाई 3 फीट पर करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**19.10.2020**	——	--

सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार

एचएयू वैज्ञानिकों ने लंबी रिसर्च के बाद किया दावा

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 19 अक्टूबर : गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	**19.10.2020**	——	--

एचएयू का दावा, सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार

पल पल न्यूज: हिसार, 19 अक्टूबर। गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है।

जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रूक जाती है व गन्ना अधिक गिरता है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। हालांकि यह प्रभाव मौसम, स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मृदा संघनन के कारण मिट्टी घनत्व में वृद्धि, छिद्र में कमी, जल भंडारण की क्षमता और जड़ प्रवेश की बाधाएं उत्पन होती हैं, जिससे गन्ने की पैदावार कम हो जाती है और किसान जानकारी के अभाव में इस ओर ध्यान नहीं दे पाता। सब-साइलर को विकसित करने वाले सस्य विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोडने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई। जमीन के नीचे सख्त सतह को तोडने के लिए बिजाई से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चित दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिजलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए। बिजाई के लिए दो से अढ़ाई फीट पर खुड्डु बनाएं। अगर गन्ने में अंत्त-फसल लेनी हो तो बिजाई तीन फीट पर करें। विश्वविद्यालय के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा।

प्रोफेसर समर सिंह का फाइल फोटो।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**20.10.2020**	——	--

एचएयू वैज्ञानिकों ने लंबी रिसर्च के बाद किया दावा

सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार

हिसार, 19 अक्टूबर (सुरेंद्र सोढी): गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है।

जमीन की सघन परत करती है गन्ने की पैदावार में कमी

जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रूक जाती है व गन्ना अधिक गिरता है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। हालांकि यह प्रभाव मौसम, स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मृदा संघनन के कारण मिट्टी घनत्व में वृद्धि, छिद्र में कमी, जल भंडारण की क्षमता और जड़ प्रवेश की बाधाएं उत्पन होती हैं, जिससे गन्ने की पैदावार कम हो जाती है और किसान जानकारी के अभाव में इस ओर ध्यान नहीं दे पाता।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किया गया यंत्र। (दाएं) विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह का फाइल फोटो।

ऐसे करेगा सब-साइलर काम

सब-साइलर को विकसित करने वाले सस्य विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोडने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई। जमीन के नीचे सख्त सतह को तोडने के लिए बिजाई से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चित दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिजलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए। बिजाई के लिए दो से अढ़ाई फीट पर खुड्ड बनाएं। अगर गन्ने में अंत-फसल लेनी हो तो बिजाई तीन फीट पर करें।

विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया: प्रोफेसर समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा।

ये कारण भी हैं मुख्य

गन्ना भारत और हरियाणा की एक प्रमुख नकदी फसल है, लेकिन खराब प्रबंधन, मृदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मृदा का क्षीण होना, रोग व कीट आदि कई कारण है जो गन्ने की उत्पादकता पर विपरीत असर डालते हैं। रोपण से लेकर कटाई और चीनी मिल या डिस्टिलरी तक परिवहन से भारी मशीनरी के यातायात से जुड़े गहन मशीनीकरण से मिट्टी की स्थिति खराब हो गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**19.10.2020**	——	--

सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार

एचएयू वैज्ञानिकों ने लंबी रिसर्च के बाद किया दावा

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है।

सब-साइलर को विकसित करने वाले सस्य विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व

सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	**19.10.2020**	——	--

सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार

एचएयू वैज्ञानिकों ने लंबी रिसर्च के बाद किया दावा

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है।

जमीन की सघन परत करती है गन्ने की पैदावार में कमी

जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रूक जाती है व गन्ना अधिक गिरता है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। हालांकि यह प्रभाव मौसम, स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मृदा संघनन के कारण मिट्टी घनत्व में वृद्धि, छिद्र में कमी, जल भंडारण की क्षमता और जड़ प्रवेश की बाधाएं उत्पन होती हैं, जिससे गन्ने की पैदावार कम हो जाती है और किसान जानकारी के अभाव में इस ओर ध्यान नहीं दे पाता।

ऐसे करेगा सब-साइलर काम

सब-साइलर को विकसित करने वाले सस्य विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोडने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई। जमीन के नीचे सख्त सतह को तोडने के लिए बिजाई से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चित दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिजलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए। बिजाई के लिए दो से अढ़ाई फीट पर खुड्ड बनाएं।

विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा।

यह कारण भी हैं मुख्य

गन्ना भारत और हरियाणा की एक प्रमुख नकदी फसल है, लेकिन खराब प्रबंधन, मृदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मृदा का क्षीण होना, रोग व कीट आदि कई कारण है जो गन्ने की उत्पादकता पर विपरीत असर डालते हैं। रोपण से लेकर कटाई और चीनी मिल या डिस्टिलरी तक परिवहन से भारी मशीनरी के यातायात से जुड़े गहन मशीनीकरण से मिट्टी की स्थिति खराब हो गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**19.10.2020**	——	--

सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार, एचएयू वैज्ञानिकों ने लंबी रिसर्च के बाद किया दावा

पांच बजे न्यूज

हिसार। गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है।

जमीन की सघन परत करती है गन्ने की पैदावार में कमी

जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रूक जाती है व गन्ना अधिक गिरता है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। हालांकि यह प्रभाव मौसम, स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मृदा संघनन के कारण मिट्टी घनत्व में वृद्धि, छिद्र में कमी, जल भंडारण की क्षमता और जड़ प्रवेश की बाधाएं उत्पन होती हैं, जिससे गन्ने की पैदावार कम हो जाती है और किसान जानकारी के अभाव में इस ओर ध्यान नहीं दे पाता।

ऐसे करेगा सब-साइलर काम

सब-साइलर को विकसित करने वाले सस्य विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई। जमीन के नीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए बिजाई से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चित दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिजलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए। बिजाई के लिए दो से अढ़ाई फीट पर खुड्ड बनाएं। अगर गन्ने में अंत: फसल लेनी हो तो बिजाई तीन फीट पर करें।

ये कारण भी हैं मुख्य

गन्ना भारत और हरियाणा की एक प्रमुख नकदी फसल है, लेकिन खराब प्रबंधन, मृदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मृदा का क्षीण होना, रोग व कीट आदि कई कारण है जो गन्ने की उत्पादकता पर विपरीत असर डालते हैं। रोपण से लेकर कटाई और चीनी मिल या डिस्टिलरी तक परिवहन से भारी मशीनरी के यातायात से जुड़े गहन मशीनीकरण से मिट्टी की स्थिति खराब हो गई है।

विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और वि का नाम यूं ही चमकता रहेगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**19.10.2020**	——	--

गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए हकृवि ने विकसित किया सब-साइलर

हिसार/19 अक्टूबर/रिपोर्टर

गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब-साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ाने में सहायक होगा। इस उपकरण को विश्वविद्यालय की कृषि अधिकारियों की बैठक में किसानों के लिए अनुमोदित कर दिया गया है। जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रूक जाती है व गन्ना अधिक गिरता है, जिससे फसल की पैदावार भी कम हो जाती है। हालांकि यह प्रभाव मौसम, स्थान और मिट्टी के प्रकार के कारण भी हो सकता है। मृदा संघनन के कारण मिट्टी घनत्व में वृद्धि, छिद्र में कमी, जल भंडारण की क्षमता और जड़ प्रवेश की बाधाएं उत्पन होती हैं, जिससे गन्ने की पैदावार कम हो जाती है और किसान जानकारी के अभाव में इस ओर ध्यान नहीं दे पाता। सब-साइलर को विकसित करने वाले सस्य विज्ञानी डॉ. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) में जमीन की कुछ गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोड़ने के लिए इस उपकरण को विकसित किया गया है। लंबी रिसर्च के बाद सकारात्मक परिणाम सामने आए और गन्ने की पैदावार में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई। जमीन के नीचे सख्त सतह को तोड़ने के लिए बिजाई से पहले चिजलर को डेढ़-डेढ़ मीटर की दूरी पर डेढ़ फीट की गहराई में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम दिशा में चलाना है। चार साल में एक बार चिजलर का प्रयोग खेत में किसान द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए। बिजाई के लिए दो से अढ़ाई फीट पर खुड्ड बनाएं। अगर गन्ने में अंत: फसल लेनी हो तो बिजाई तीन फीट पर करें। गन्ना भारत और हरियाणा की एक प्रमुख नकदी फसल है, लेकिन खराब प्रबंधन, मृदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मृदा का क्षीण होना, रोग व कीट आदि कई कारण है जो गन्ने की उत्पादकता पर विपरीत असर डालते हैं। रोपण से लेकर कटाई और चीनी मिल या डिस्टिलरी तक परिवहन से भारी मशीनरी के यातायात से जुड़े गहन मशीनीकरण से मिट्टी की स्थिति खराब हो गई है। विश्वविद्यालय के कुलपति व सब-साइलर विकसित करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से किसानों के हित के लिए काम करते हुए विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। सब-साइलर या चिजलर यंत्र को विकसित करने वाली मेरी पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून पंजाबी	**19.10.2020**	——	--

ਗੰਨੇ ਦੀ ਬਿਜਾਈ ਲਈ ਨਵੀਂ ਤਕਨੀਕ ਤਿਆਰ

ਟੋਹਾਣਾ: ਖੇਤੀਬਾੜੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਹਿਸਾਰ ਦੇ ਵਿਗਿਆਨੀਆਂ ਨੇ ਗੰਨੇ ਦੀ ਵੱਧ ਪੈਦਾਵਾਰ ਲੈਣ ਲਈ ਨਵੀ ਤਕਨੀਕ ਨਾਲ ਖੇਤ ਦੀ ਜੋਤਾਂ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਯੰਤਰ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਉਪ-ਕੁਲਪਤੀ ਸਮਰ ਸਿੰਘ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਟਰੈਕਟਰ ਨਾਲ ਚੱਲਣ ਵਾਲੇ ਇਸ ਯੰਤਰ ਨੂੰ ਸਬ-ਸਾਈਲਰ ਦਾ ਨਾਂ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਗੰਨਾ ਵਿਗਿਆਨੀਆਂ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਗੰਨੇ ਦੀ ਤੈਅ ਡੂੰਘਾਈ ਤੇ ਬਿਜਾਈ ਕਰ ਕੇ 20 ਤੋਂ 30 ਫ਼ੀਸਦ ਵਾਧੂ ਪੈਦਾਵਾਰ ਹਾਸਲ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਡਾ. ਵਿਜੇ ਕੁਮਾਰ ਅਰੋੜਾ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਭੂਮੀ ਦੀ ਖਾਸ ਡੂੰਘਾਈ ਤੱਕ ਬੀਜੀ ਫ਼ਸਲ ਕਾਫ਼ੀ ਲਾਹੇਵੰਦ ਸਾਬਤ ਹੋਵੇਗੀ। -ਪੱਤਰ ਪ੍ਰੇਰਕ

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 20.10.2020 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 2.5

खेती में पानी बचाने पर करेंगे रिसर्च

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की बैठक में तय हुआ खाका

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सोमवार को रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49वीं उच्च स्तरीय बैठक आयोजित हुई। इसमें विज्ञानियों को आगामी शोध के लिए विशेष लक्ष्य दिए गए हैं। इस बार विज्ञानियों को किसान की लागत कम करने, जहरमुक्त खेती, कृषि में पानी बचाने के प्राविधान तैयार करने को कहा है। क्योंकि मौजूदा समय में प्रदेश की सरकार और किसानों के सामने यह समस्याएं चुनौतियां बनकर खड़ी हुई हैं। इसके साथ ही ड्रोन व रोबोटिक तकनीकि पर भी रिसर्च के कार्य को आगे बढ़ाया जाएगा।

छोटी से छोड़ी जोत किसान तक पहुंचाने की बात : विज्ञानियों को फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचाने का लक्ष्य दिया गया है। इसके साथ ही बदलती जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखते हुए रिसर्च को आगे बढ़ाया जाएगा।

अब तक एचएयू ने 250 किस्में की हैं इजाद : एचएयू में बीते वर्षों में अनाज, दलहन, तिलहन फसलों, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। विश्वविद्यालय के पास 17 पेटेंट, 2 डिजाइन, 5 कॉपीराइट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान्न भंडारण में अहम रोल है। बैठक के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी विज्ञानी व उच्च अधिकारी शामिल हुए।

अनुसंधान कार्यक्रम समिति की 49वीं बैठक को संबोधित करते कुलपति प्रोफेसर समर सिंह। साथ में अन्य अधिकारी। ● पीआरओ

मधुमक्खी पालन, बागवानी व मशरूम खेती को दें बढ़ावा

कृषि विज्ञानियों ने मधुमक्खी पालन की आधुनिक तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया। इस दौरान किसानों से बागवानी के क्षेत्र में भी फलों की उन्नत किस्मों को अपनाते हुए आगे बढ़ने की अपील की। साथ ही मशरूम की विभिन्न किस्मों को लेकर भी चर्चा की जिनकी मौजूदा समय में औषधीय महत्ता बढ़ रही है। इसके अलावा अधिक उत्पादन क्षमता वाली फसलों की किस्मों, जैविक खेती के साथ गुणवत्तापूर्वक अनुसंधान की दिशा में काम करने का भी आह्वान किया।

> वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इसके अलावा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि गलत खानपान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके। -प्रो. समर सिंह, वीसी।

सब साइलर बढ़ाएगा गन्ने की पैदावार

जागरण संवाददाता, हिसार : गन्ने की खेती करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। गन्ने की पैदावार बढ़ाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने एक रिसर्च की है। इस रिसर्च के अनुसार गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए विकसित किया गया सब साइलर या चिजलर नामक उपकरण का प्रयोग गन्ने की उत्पादकता को 20 से 30 फीसद तक बढ़ाने में सहायक होगा।

जमीन की संघनन परत करती है गन्ने की पैदावार में कमी: जमीन में कुछ निश्चित गहराई पर संघनन परत बन जाती है, जिससे पौधे की जड़ की वृद्धि और वितरण में कमी आ जाती है। इससे पौधे की जल और पोषक तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे पौधे की वृद्धि रुक जाती है।

ऐसे करेगा सब साइलर काम

सब साइलर को विकसित करने वाले सस्य विज्ञानी डा. मेहरचंद व सेवानिवृत्त प्रधान मृदा विज्ञानी डा. विजय कुमार ने बताया कि जमीन की गहराई पर बनने वाली सघन कठोर परत तोड़ने को इस उपकरण को विकसित किया गया है।

ये भी मुख्य कारण

गन्ना भारत और हरियाणा की एक प्रमुख नकदी फसल है, लेकिन खराब प्रबंधन, मृदा की स्थिति, खराब मौसम की स्थिति, मृदा का क्षीण होना, रोग व कीट आदि कई कारण है जो गन्ने की उत्पादकता पर विपरीत असर डालते हैं।

> सब-साइलर या चिजलर यंत्र गन्ना किसानों की काफी मदद करेगा। विज्ञानियों ने काफी मेहनत से यह मशीन तैयार की है, उन्हें बधाई।
> प्रो समर सिंह, कुलपति, एचएयू

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 20.10.2020 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 5-8

बदलती जलवायु और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रख वैज्ञानिक करें रिसर्च : प्रो. समर सिंह

रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49वीं बैठक में कृषि वैज्ञानिकों में रिसर्च को लेकर हुआ मंथन

भास्कर न्यूज | हिसार

मधुमक्खी पालन, बागवानी व मशरूम खेती को बढ़ावा देने पर रहा जोर

एचएयू की अनुसंधान कार्यक्रम समिति की 49वीं बैठक को संबोधित करते कुलपति प्रो. समर सिंह।

बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान रखकर वैज्ञानिक अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी, वहीं दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी।

यह आह्वान एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49वीं उच्च स्तरीय बैठक को बतौर चेयरमैन संबोधित कर रहे थे।

प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा।

एचएयू का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने पिछली बैठक के एजेंडों के बारे में चर्चा की और बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा बीते सालों में अनाज, दलहन, तिलहन फसलों, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। एचएयू के पास 17 पेटेंट, 2 डिजाइन, 5 कॉपीराइट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल है। इस दौरान वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि अगर किसान समूह बनाकर खेती करें तो महंगी तकनीकों के खर्च को वहन करने में सक्षम हो सकते हैं और अधिक लाभ कमाकर आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकते हैं। बैठक के दौरान कृषि वैज्ञानिकों ने मधुमक्खी पालन की आधुनिक तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया। किसानों से बागवानी के क्षेत्र में भी फलों की उन्नत किस्मों को अपनाते हुए आगे बढ़ने की अपील की। मशरूम की विभिन्न किस्मों को लेकर भी चर्चा की।

इन्होंने लिया बैठक में हिस्सा

बैठक में एचएयू ही नहीं अपितु प्रदेश के कृषि एवं बागवानी विभाग के महानिदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अलावा विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल, केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान हिसार, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान संस्थान, हिसार, मत्स्य विभाग हरियाणा, पर्यावरण विभाग के निदेशक, लुवास से अनुसंधान निदेशक, एचएयू के वित्त नियंत्रक सहित एचएयू व लुवास के सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता एवं निदेशकों ने भाग लेकर विचार साझा किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 20.10.2022...पृष्ठ संख्या.....3.....कॉलम.....4-6.....

बदलती जलवायु व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर करें रिसर्च : प्रो. समर सिंह

रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की उच्च स्तरीय बैठक में कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन, भविष्य की योजना पर किया फोकस

संबोधित करते कुलपति प्रो. समर सिंह व उपस्थित अन्य अधिकारी।

हिसार, 19 अक्तूबर (ब्यूरो): वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी, वहीं अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। यह आह्वान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं उच्चस्तरीय बैठक को बतौर चेयरमैन संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने पिछली बैठक के एजैंडों के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। बैठक के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी वैज्ञानिक व उच्च अधिकारी शामिल हुए और रिसर्च कार्यक्रम समिति के विभिन्न मुद्दों पर समीक्षा की।

इस दौरान वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि अगर किसान समूह बनाकर खेती करें तो महंगी तकनीकों के खर्च को वहन करने में सक्षम हो सकते हैं और अधिक से अधिक लाभ कमाकर आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकते हैं। बैठक के दौरान कृषि वैज्ञानिकों ने मधुमक्खी पालन की आधुनिक तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....समर उजाला.....

दिनांक 20.10.2020...पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....4-5.....

बदलती जलवायु व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर करें शोध : प्रो. समर सिंह

हिसार। वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर अपने शोध कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी, वहीं दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी मांग बढ़ेगी। यह आह्वान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे सोमवार को विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49वीं उच्च स्तरीय बैठक को बतौर चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा बीते सालों में अनाज, दलहन, तिलहन फसलों, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय के पास 17 पेटेंट, 2 डिजाइन, 5 कॉपीराइट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भंडारण में अहम रोल है। बैठक के दौरान कृषि वैज्ञानिकों ने मधुमक्खी पालन की आधुनिक तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया। साथ ही मशरूम की विभिन्न किस्मों को लेकर भी चर्चा की, जिनकी मौजूदा समय में औषधीय महत्ता बढ़ रही है। बैठक में प्रदेश के कृषि एवं बागवानी विभाग के महानिदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल, एचएयू के वित्त नियंत्रक सहित एचएयू व लुवास के महाविद्यालयों के अधिष्ठाता एवं निदेशकों ने भाग लिया। *ब्यूरो*

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**19.10.2020**	——	--

बदलती जलवायु व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर करें रिसर्च : प्रो. समर सिंह

रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की उच्च स्तरीय बैठक में कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन, भविष्य की योजना पर किया फोकस

पांच बजे न्यूज

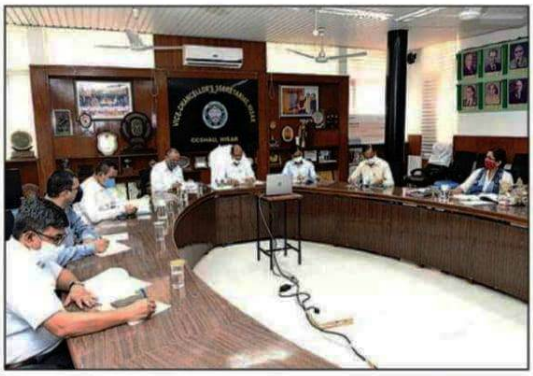

हिसार। वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी वहीं दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। यह आह्वान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं उच्च स्तरीय बैठक को बतौर चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। इसके अलावा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि गलत खानपान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा। उन्होंने भविष्य की चिंता करते हुए कहा कि भूमिगत जल स्तर नीचे जा रहा है और पानी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, ऐसे में पानी की बचत और श्रम गहन प्रौद्योगिकी को अपनाना बहुत ही जरूरी है। उन्होंने किसानों से भी अपील की कि वे विश्वविद्यालय से जुड़कर अधिक से अधिक कृषि संबंधी जानकारी हासिल करें और लाभ उठाएं। विश्वविद्यालय हर समय किसानों की सेवा के तत्पर है।

विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने पिछली बैठक के एजेंडों के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की और बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा बीते सालों में अनाज, दलहन, तिलहन फसलों, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय के पास 17 पेटेंट, 2 डिजाइन, 5 कॉपीराइट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल है। बैठक के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी वैज्ञानिक व उच्च अधिकारी शामिल हुए और रिसर्च कार्यक्रम समिति के विभिन्न मुद्दों पर समीक्षा की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि अगर किसान समूह बनाकर खेती करें तो महंगी तकनीकों के खर्च को वहन करने में सक्षम हो सकते हैं और अधिक से अधिक लाभ कमाकर आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकते हैं। अनुसंधान निदेशक ने बताया कि विश्वविद्यालय ने इसी वर्ष मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से जारी अटल रैंकिंग ऑफ इंस्टीट्यूशन्स ऑन इनोवेशन एंड एचीवमेंटस में कृषि विश्वविद्यालयों में देशभर में प्रथम स्थान हासिल किया, जो विश्वविद्यालय के लिए बहुत ही गौरव की बात है। इसी प्रकार केंद्रीय मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वर्ष 2020 के लिए जारी नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क में विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय को देशभर में 49वां स्थान जबकि प्रदेश में पहला स्थान मिला था।

मधुमक्खी पालन, बागवानी व

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	**19.10.2020**	——	--

बदलती जलवायु व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर करें रिसर्चः प्रो. समर सिंह

*** कहा: हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा**

पल पल न्यूजः हिसार, 19 अक्टूबर। वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी वहीं दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। यह आह्वान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं उच्च स्तरीय बैठक को बतौर चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। इसके अलावा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि गलत खानपान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा। उन्होंने भविष्य की चिंता करते हुए कहा कि भूमिगत जल स्तर नीचे जा रहा है और पानी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, ऐसे में पानी की बचत और श्रम गहन प्रौद्योगिकी को अपनाना बहुत ही जरूरी है। उन्होंने किसानों से भी अपील की कि वे विश्वविद्यालय से जुड?र अधिक से अधिक कृषि संबंधी जानकारी हासिल करें और लाभ उठाएं। विश्वविद्यालय हर समय किसानों की सेवा के तत्पर है। बैठक में अनुसंधान निदेशक व अनुसंधान कार्यक्रम समिति के सचिव डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि कार्यक्रम समिति की इस 49वीं बैठक में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ही नहीं अपितु प्रदेश के कृषि एवं बागवानी विभाग के महानिदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अलावा विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल, केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान हिसार सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	**19.10.2020**	——	--

बदलती जलवायु को ध्यान में रखकर करें रिसर्च : वीसी

रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की उच्च स्तरीय बैठक में कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन, भविष्य की योजना पर किया फोकस

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी वहीं दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। यह आह्वान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं उच्च स्तरीय बैठक को बतौर चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए।

इसके अलावा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि गलत खानपान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा।

उन्होंने भविष्य की चिंता करते हुए कहा कि भूमिगत जल स्तर नीचे जा रहा है और पानी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, ऐसे में पानी की बचत और श्रम गहन प्रौद्योगिकी को अपनाना बहुत ही जरूरी है। बैठक के दौरान कृषि वैज्ञानिकों ने मधुमक्खी पालन की आधुनिक तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया। अनुसंधान निदेशक व अनुसंधान कार्यक्रम समिति के सचिव डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ही नहीं अपितु प्रदेश के कृषि एवं बागवानी विभाग के महानिदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अलावा विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल, केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान हिसार, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान संस्थान, हिसार, मत्स्य विभाग हरियाणा, पर्यावरण विभाग के निदेशक, लुवास से अनुसंधान निदेशक, एचएयू के वित्त नियंत्रक सहित एचएयू व लुवास के सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता एवं निदेशकों ने भाग लेकर अपने विचार साझा किए।

विवि का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने पिछली बैठक के एजेंडों के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की और बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा बीते सालों में अनाज, दलहन, तिलहन फसलों, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय के पास 17 पेटेंट, 2 डिजाइन, 5 कॉपीराइट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल है। बैठक के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी वैज्ञानिक व उच्च अधिकारी शामिल हुए और रिसर्च कार्यक्रम समिति के विभिन्न मुद्दों पर समीक्षा की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि अगर किसान समूह बनाकर खेती करें तो महंगी तकनीकों के खर्च को वहन करने में सक्षम हो सकते हैं और अधिक से अधिक लाभ कमाकर आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	**19.10.2020**	——	--

बदलती जलवायु व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर करें रिसर्च : कुलपति

रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की उच्च स्तरीय बैठक में कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन, भविष्य की योजना पर किया फोकस

टुडे न्यूज़ | हिसार

वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी वहीं दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। यह आह्वान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया।

वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं उच्च स्तरीय बैठक को बतौर चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। इसके अलावा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि गलत खानपान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा। उन्होंने भविष्य की चिंता करते हुए कहा कि भूमिगत जल स्तर नीचे जा रहा है और पानी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, ऐसे में पानी की बचत और श्रम गहन प्रौद्योगिकी को अपनाना बहुत ही जरूरी है। उन्होंने किसानों से भी अपील की कि वे विश्वविद्यालय से जुड़कर अधिक से अधिक कृषि संबंधी जानकारी हासिल करें और लाभ उठाएं। विश्वविद्यालय हर समय किसानों की सेवा के तत्पर है।

विश्वविद्यालय की अनुसंधान कार्यक्रम समिति की 49 वीं बैठक के दौरान संबोधित करते कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व उपस्थित अन्य अधिकारी।

मधुमक्खी पालन, बागवानी व मशरूम खेती को बढ़ावा देने पर रहा जोर

बैठक के दौरान कृषि वैज्ञानिकों ने मधुमक्खी पालन की आधुनिक तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया। इस दौरान किसानों से बागवानी के क्षेत्र में भी फलों की उन्नत किस्मों को अपनाते हुए आगे बढ़ने की अपील की। साथ ही मशरूम की विभिन्न किस्मों को लेकर भी चर्चा की जिनकी मौजूदा समय में औषधीय महत्ता बढ़ रही है। इसके अलावा अधिक उत्पादन क्षमता वाली फसलों की किस्मों, कृषि वानिकी, जैविक खेती के साथ गुणवत्तापूर्वक अनुसंधान की दिशा में काम करने का भी आह्वान किया।

विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने पिछली बैठक के एजेंडों के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की और बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा बीते सालों में अनाज, दलहन, तिलहन फसलें, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय के पास 17 पेटेंट, 2 डिजाइन, 5 कॉपीराइट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल है। बैठक के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी वैज्ञानिक व उच्च अधिकारी शामिल हुए और रिसर्च कार्यक्रम समिति के विभिन्न मुद्दों पर समीक्षा की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि अगर किसान समूह बनाकर खेती करें तो महंगी तकनीकों के खर्च को वहन करने में सक्षम हो सकते हैं और अधिक से अधिक लाभ कमाकर आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकते हैं। अनुसंधान निदेशक ने बताया कि विश्वविद्यालय ने इसी वर्ष मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से जारी अटल रैंकिंग ऑफ इंस्टीट्यूशन्स ऑन इनोवेशन एंड एचीवमेंटस (एआरआईआईए) में कृषि विश्वविद्यालयों में देशभर में प्रथम स्थान हासिल किया, जो विश्वविद्यालय के लिए बहुत ही गौरव की बात है। इसी प्रकार केंद्रीय मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वर्ष 2020 के लिए जारी नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फेरमवर्क (एनआईआरएफ) में विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय को देशभर में 49वां स्थान जबकि प्रदेश में पहला स्थान मिला था।

इन्होंने लिया बैठक में हिस्सा

अनुसंधान निदेशक व अनुसंधान कार्यक्रम समिति के सचिव डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि कार्यक्रम समिति की इस 49वीं बैठक में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ही नहीं अपितु प्रदेश के कृषि एवं बागवानी विभाग के महानिदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अलावा विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल, केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान हिसार, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान संस्थान, हिसार, मत्स्य विभाग हरियाणा, पर्यावरण विभाग के निदेशक, लुवास से अनुसंधान निदेशक, एचएयू के वित्त नियंत्रक सहित एचएयू व लुवास के सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता एवं निदेशकों ने भाग लेकर अपने विचार साझा किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	**20.10.2020**	——	--

एचएयू रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की उच्च स्तरीय बैठक में कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन

बदलती जलवायु व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर करें रिसर्च : प्रोफेसर समर सिंह

सच कहूं/संदीप सिंहमार

हिसार। वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी वहीं दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। यह आह्वान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं उच्च स्तरीय बैठक को बतौर चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत

वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। इसके अलावा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि गलत खानपान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके।

विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने पिछली बैठक के एजेंडों के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की और बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा बीते सालों में अनाज, दलहन, तिलहन फसलों, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय के पास 17 पेटेंट, 2 डिजाइन, 5 कॉपीराइट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल है। बैठक के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी वैज्ञानिक व उच्च अधिकारी शामिल हुए और रिसर्च कार्यक्रम समिति के विभिन्न मुद्दों पर समीक्षा की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि अगर किसान समूह बनाकर खेती करें तो महंगी तकनीकों के खर्च को वहन करने में सक्षम हो सकते हैं और अधिक से अधिक लाभ कमाकर आर्थिक रुप से समृद्ध बन सकते हैं।

मधुमक्खी पालन, बागवानी व मशरुम खेती को बढ़ावा देने पर रहा जोर

बैठक के दौरान कृषि वैज्ञानिकों ने मधुमक्खी पालन की आधुनिक तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया। इस दौरान किसानों से बागवानी के क्षेत्र में भी फलों की उन्नत किस्मों को अपनाते हुए आगे बढ़ने की अपील की। साथ ही मशरुम की विभिन्न किस्मों को लेकर भी चर्चा की जिनकी मौजूदा समय में औषधीय महत्ता बढ़ रही है। इसके अलावा अधिक उत्पादन क्षमता वाली फसलों की किस्मों, कृषि वानिकी, जैविक खेती के साथ गुणवत्तापूर्वक अनुसंधान की दिशा में काम करने का भी आह्वान किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	**19.10.2020**	--	--

बदलती जलवायु व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखकर करें रिसर्च : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय की अनुसंधान कार्यक्रम समिति की बैठक को संबोधित करते कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व उपस्थित अन्य अधिकारी। (छायाः राज पराशर)

हिसार, 19 अक्तूबर (राज पराशर): वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी वहीं दूसरी ओर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। यह आह्वान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49वीं उच्च स्तरीय बैठक को बतौर चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। इसके अलावा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि गलत खानपान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा। उन्होंने भविष्य की चिंता करते हुए कहा कि भूमिगत जल स्तर नीचे जा रहा है और पानी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, ऐसे में पानी की बचत और श्रम गहन प्रौद्योगिकी को अपनाना बहुत ही जरूरी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**19.10.2020**	——	--

जैविक खेती को बढ़ावा दें वैज्ञानिक : कुलपति

हिसार/19 अक्टूबर/रिपोर्टर

वैज्ञानिक मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी वहीं दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। यह आह्वान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से किया। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं उच्च स्तरीय बैठक को बतौर चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक फसलों, फलों व सब्जियों की नई किस्मों व तकनीकों को विकसित करते समय इस बात का भी खास ध्यान रखें कि उसका लाभ हर छोटी से छोटी जोत वाले किसान तक पहुंचना चाहिए। इसके अलावा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि गलत खानपान व अधिक रसायनों के प्रयोग से बढ़ रही बीमारियों पर अंकुश लगाया जा सके। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसी दूसरी विकसित तकनीकों को अपनाना होगा और किसानों के अनुकूल बनाना होगा। उन्होंने भविष्य की चिंता करते हुए कहा कि भूमिगत जल स्तर नीचे जा रहा है और पानी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, ऐसे में पानी की बचत और श्रम गहन प्रौद्योगिकी को अपनाना बहुत ही जरूरी है। उन्होंने किसानों से भी अपील की कि वे विश्वविद्यालय से जुड़कर अधिक से अधिक कृषि संबंधी जानकारी हासिल करें और लाभ उठाएं। विश्वविद्यालय हर समय किसानों की सेवा के तत्पर है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा बीते सालों में अनाज, दलहन, तिलहन फसलों, सब्जियों और फलों की लगभग 250 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। इसके अलावा विश्वविद्यालय के पास 17 पेटेंट, 2 डिजाइन, 5 कॉपीराइट और एक व्यापार चिह्न हैं। विश्वविद्यालय का देश के खाद्यान भण्डारण में अहम रोल है। बैठक के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी वैज्ञानिक व उच्च अधिकारी शामिल हुए और रिसर्च कार्यक्रम समिति के विभिन्न मुद्दों पर समीक्षा की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि अगर किसान समूह बनाकर खेती करें तो महंगी तकनीकों के खर्च को वहन करने में सक्षम हो सकते हैं और अधिक से अधिक लाभ कमाकर आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तम हिन्दू न्यूज	**19.10.2020**	——	--

बदलते जलवायु परिवेश व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के मद्देनजर वैज्ञानिक कार्य को आगे बढ़ाएं : प्रो. समर

चंडीगढ़/उत्तम हिन्दू न्यूज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे मौजूदा समय में बदलते जलवायु परिवेश व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखते हुए अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाएं। इससे एक ओर जहां फसलों की गुणवत्ता कायम रहेगी वहीं दूसरी ओर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी उनकी डिमांड बढ़ेगी। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित रिसर्च प्रोग्राम कमेटी की 49 वीं उच्च स्तरीय बैठक को बतौर चेयरमैन संबोधित कर रहे थे। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने पिछली बैठक के एजेंडों के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से भी वैज्ञानिक व उच्च अधिकारी शामिल हुए और रिसर्च कार्यक्रम समिति के विभिन्न मुद्दों पर समीक्षा की। इस दौरान वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि अगर किसान समूह बनाकर खेती करें तो मंहगी तकनीकों के खर्च को वहन करने में सक्षम हो सकते है और अधिक से अधिक लाभ कमाकर आर्थिक रूप से समृद्ध बन सकते है। अनुसंधान निदेशक व अनुसंधान कार्यक्रम समिति के सचिव डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि कार्यक्रम समिति की इस 49वीं बैठक में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ही नहीं अपितु प्रदेश के कृषि एवं बागवानी विभाग के महानिदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अलावा विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल, केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान हिसार सहित एचएयू व लुवास के सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता एवं निदेशकों ने भाग लेकर अपने विचार साझा किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... हरि भूमि .....

दिनांक 20.10.2020 पृष्ठ संख्या.....9.....कॉलम.....2-8.....

हरिभूमि
हिसार-फतेहाबाद-सिरसा भूमि
रोहतक, मंगलवार 20 अक्टूबर 2020

एचएयू के बीएससी एग्रीकल्चर, मत्स्य कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर तथा मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

विवि कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है, जिसमें करीब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र

परीक्षा के दौरान सामाजिक दूरी का रखा जाएगा ध्यान

- चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी
- विवि प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी

- प्रवेश परीक्षा की सभी तैयारियां पूरी, हिसार व हांसी के 24 स्कूलों में बनाए गए परीक्षा केंद्र
- परीक्षार्थी 20 अक्टूबर से डाउनलोड कर सकते हैं एडमिट कार्ड

समस्या का सामना न करना पड़े और कोरोना महामारी के चलते जारी हिदायतों का भी सही तरीके से पालन हो सके। सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सेनेटाइज कराया जाएगा और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा जाएगा।

एचएयू कैंपस के अलावा शहर और हांसी में बनाए गए परीक्षा केंद्र

परीक्षा नियंत्रक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए करीब 12000 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिसमें से 11692 ने बीएससी एग्रीकल्चर और करीब 500 ने बीएससी मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए आवेदन किया था। उन्होंने बताया कि इन प्रवेश परीक्षाओं के सफल आयोजन के लिए हिसार व हांसी के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, कैम्पस स्कूल, ठाकुर दास मार्गव वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गुरु जंभेश्वर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ब्लूमिंग डेल्स वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सीआर पब्लिक स्कूल, विद्या भारती पब्लिक स्कूल, सिद्धार्थ इंटरनेशनल स्कूल, विश्वास वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, न्यू यशोदा पब्लिक स्कूल, डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल, सीआर लॉ कॉलेज, संत कबीर स्कूल, ओम सिटरलिंग यूनिवर्सिटी, एफ.सी. महिला महाविद्यालय के अलावा हांसी क्षेत्र के श्री काली देवी विद्या मंदिर स्कूल, हांसी, आरपीएस गढ़ी (हांसी), श्री कृष्ण प्रणामी स्कूल हांसी, हिंदू वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हांसी, यदुवंशी स्कूल तथा बाबा खेदा बहादुर पब्लिक स्कूल शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भास्कर.....

दिनांक 20.10.2020 पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....4-5.....

बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स में 12 हजार विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है, जिसमें करीब 12 हजार परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएगी।

▪ हिसार और हांसी के स्कूलों में बनाए परीक्षा के लिए केंद्र

परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए करीब 12 हजार विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिसमें से 11692 ने बीएससी एग्रीकल्चर और करीब 500 ने बीएससी मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए आवेदन किया था। इन प्रवेश परीक्षाओं के सफल आयोजन के लिए हिसार व हांसी के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, कैंपस स्कूल, ठाकुर दास भार्गव वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गुरु जंभेश्वर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ब्लूमिंग डेल्स वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सीआर पब्लिक स्कूल, विद्या भारती पब्लिक स्कूल, सिद्धार्थ इंटरनेशनल स्कूल, विश्वास वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, न्यू यशोदा पब्लिक स्कूल, डी.ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कूल, सी.आर. लॉ कॉलेज, सेंट कबीर स्कूल, ओम स्टिरलिंग यूनिवर्सिटी, एफ.सी. महिला महाविद्यालय के अलावा हांसी क्षेत्र के श्री काली देवी विद्या मंदिर स्कूल, हांसी, आरपीएस गढ़ी(हांसी), श्री कृष्ण प्रणामी स्कूल हांसी, हिंदू वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हांसी, यदुवंशी स्कूल व बाबा बंदा बहादुर पब्लिक स्कूल शामिल हैं।

20 से मिलने शुरू हो जाएंगे एडमिट कार्ड

परीक्षा नियंत्रक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि प्रवेश परीक्षा के लिए परीक्षार्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट से 20 अक्टूबर से अपने एडमिट कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं। इसके बावजूद अगर किसी परीक्षार्थी को कोई परीक्षा संबंधी परेशानी है तो वह एचएयू की वेबसाइट पर दिए गए संपर्क नंबर से संपर्क कर सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... पंजाब केसरी .....

दिनांक 20.10.2020 पृष्ठ संख्या..... 2 .....कॉलम..... 4-5 .....

बी.एससी. एग्रीकल्चर व मत्स्य के 4 वर्षीय कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

हिसार, 19 अक्तूबर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बी.एससी. एग्रीकल्चर व मत्स्य के 4 वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्तूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि बी.एससी. एग्रीकल्चर व मत्स्य के 4 वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है, जिसमें करीब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे।

■ सभी तैयारियां पूरी, हिसार व हांसी के 24 स्कूलों में बनाए गए परीक्षा केंद्र

उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएगी। परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए करीब 12000 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिसमें से 11692 ने बी.एस.सी. एग्रीकल्चर और करीब 500 ने बी.एस.सी. मत्स्य के 4 वर्षीय कोर्स के लिए आवेदन किया था। उन्होंने बताया कि इन प्रवेश परीक्षाओं के सफल आयोजन के लिए हिसार व हांसी के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, कैंपस स्कूल, ठाकुर दास भार्गव वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गुरु जंभेश्वर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ब्लूमिंग डेल्स वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सीआर पब्लिक स्कूल, विद्या भारती पब्लिक स्कूल, सिद्धार्थ इंटरनेशनल स्कूल, विश्वास वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, न्यू यशोदा पब्लिक स्कूल, डी.ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कूल, सी.आर. लॉ कॉलेज, सेंट कबीर स्कूल, ओम स्टिरलिंग यूनिवर्सिटी, एफ.सी. महिला महाविद्यालय के अलावा हांसी क्षेत्र के श्री काली देवी विद्या मंदिर स्कूल, हांसी, आरपीएस गढ़ी (हांसी), श्रीकृष्ण प्रणामी स्कूल हांसी, हिंदू वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हांसी, यदुवंशी स्कूल व बाबा बंदा बहादुर पब्लिक स्कूल शामिल हैं। परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि प्रवेश परीक्षा के लिए परीक्षार्थी विश्वविद्यालय की वैबसाइट से 20 अक्तूबर से अपने एडमिट कार्ड डाऊनलोड कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ...दैनिक जागरण...

दिनांक 20. 10. 2020 पृष्ठ संख्या ...5... कॉलम ...2-4...

एचएयू के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

जागरण संवाददाता, हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्टूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। कुलसचिव डा. बीआर कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स में करीब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में केंद्र बनाए गए हैं। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएगी।

12000 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था। 11692 ने बीएससी एग्रीकल्चर और करीब 500 ने बीएससी मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए आवेदन किया था। परीक्षाओं के लिए बनाए केंद्र : विवि के कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, कैंपस स्कूल, ठाकुर दास भार्गव वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गुरु जंभेश्वर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ब्लूमिंग डेल्स वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सीआर पब्लिक स्कूल, विद्या भारती पब्लिक स्कूल, सिद्धार्थ इंटरनेशनल स्कूल, विश्वास वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, न्यू यशोदा पब्लिक स्कूल, डीएवी. पुलिस पब्लिक स्कूल, सीआर. लॉ कॉलेज, सेंट कबीर स्कूल, ओम स्टिरलिंग यूनिवर्सिटी, एफ.सी. महिला महाविद्यालय के अलावा हांसी क्षेत्र के श्री काली देवी विद्या मंदिर स्कूल, हांसी, आरपीएस गढ़ी(हांसी), श्री कृष्ण प्रणामी स्कूल हांसी, हिंदू वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हांसी, यदुवंशी स्कूल व बाबा बंदा बहादुर पब्लिक स्कूल शामिल हैं।

आज से मिलेंगे एडमिट कार्ड

परीक्षा नियंत्रक डा. एसके पाहुजा ने बताया कि प्रवेश परीक्षा के लिए परीक्षार्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट से 20 अक्टूबर से अपने एडमिट कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं। इसके बावजूद अगर किसी परीक्षार्थी को कोई परीक्षा संबंधी परेशानी है तो वह विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर दिए गए नंबर से संपर्क कर सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ......अमर उजाला......

दिनांक 20.10.2020 पृष्ठ संख्या ....4.... कॉलम ....3....

एचएयू के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य कोर्स की प्रवेश परीक्षा 24 को

24 हजार परीक्षार्थियों के लिए हिसार व हांसी के 24 स्कूलों में बनाए गए परीक्षा केंद्र

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्तूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज ने बताया कि 12 हजार परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। परीक्षा सुबह 10:30 बजे से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएंगी। परीक्षा नियंत्रक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि लगभग 12 हजार विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिसमें से 11692 ने बीएससी एग्रीकल्चर और करीब 500 ने बीएससी मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए आवेदन किया था। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षा के लिए परीक्षार्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट से 20 अक्तूबर से अपने एडमिट कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं। ब्यूरो

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	**20.10.2020**	——	--

एचएयू के बीएससी एग्रीकल्चर कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

■ प्रवेश परीक्षा की सभी तैयारियां पूरी, परीक्षार्थी 20 अक्तूबर से डाउनलोड कर सकते हैं एडमिट कार्ड

हिसार (सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्तूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर व के चार वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है, जिसमें करीब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं ताकि परीक्षार्थियों को किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े और कोरोना महामारी के चलते जारी हिदायतों का भी सही तरीके से पालन हो सके। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएगी।

एचएयू कैंपस के अलावा हिसार व हांसी के स्कूलों में बनाए गए हैं परीक्षा केंद्र

परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए करीब 12000 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिसमें से 11692 ने बीएससी एग्रीकल्चर और करीब 500 ने बीएससी मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए आवेदन किया था। उन्होंने बताया कि इन प्रवेश परीक्षाओं के सफल आयोजन के लिए हिसार व हांसी के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय, गृह विज्ञान महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, कैंपस स्कूल, ठाकुर दास भार्गव वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गुरु जंभेश्वर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ब्लूमिंग डेल्स वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सीआर पब्लिक स्कूल,विद्या भारती पब्लिक स्कूल, सिद्धार्थ इंटरनेशनल स्कूल, विश्वास वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, न्यू यशोदा पब्लिक स्कूल, डी.ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कूल, सी.आर. लॉ कॉलेज, सेंट कबीर स्कूल, ओम स्टिरलिंग यूनिवर्सिटी, एफ. सी. महिला महाविद्यालय के अलावा हांसी क्षेत्र के श्री काली देवी विद्या मंदिर स्कूल, हांसी, आरपीएस गढ़ी (हांसी), श्री कृष्ण प्रणामी स्कूल हांसी, हिंदू वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हांसी, यदुवंशी स्कूल व बाबा बंदा बहादुर पब्लिक स्कूल शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**19.10.2020**	——	--

सार समाचार

एचएयू के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

प्रवेश परीक्षा की सभी तैयारियां पूरी, हिसार व हांसी के 24 स्कूलों में बनाए गए परीक्षा केंद्र

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्तुबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है, जिसमें करीब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं ताकि परीक्षार्थियों को किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े और कोरोना महामारी के चलते जारी हिदायतों का भी सही तरीके से पालन हो सके। सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सेनेटाइज कराया जाएगा और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा जाएगा। इसके अलावा सभी परीक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की ओर से ही परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर हाथ सेनेटाइज करवाने के बाद फेस मास्क मुहैया करवाए जाएंगे, ताकि कोरोना के खतरे से निपटने के लिए सतर्कता बरती जा सके। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	**20.10.2020**	——	--

एचएयू के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

हैलो हिसार न्यूज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्तुबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है, जिसमें करीब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं ताकि परीक्षार्थियों को किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े और कोरोना महामारी के चलते जारी हिदायतों का भी सही तरीके से पालन हो सके। सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सेनेटाइज कराया जाएगा और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	**19.10.2020**	——	--

एचएयू के बीएससी एग्रीकल्चर और मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स में 12000 विद्यार्थी देंगे प्रवेश परीक्षा

पल पल न्यूज: हिसार, 19 अक्तूबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए 24 अक्तूबर को प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाएगी। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि बीएससी एग्रीकल्चर व मत्स्य के चार वर्षीय कोर्स के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है, जिसमें करीब 12000 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। उन्होंने बताया कि प्रवेश परीक्षाओं के लिए हिसार व हांसी क्षेत्र के 24 स्कूलों में परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं ताकि परीक्षार्थियों को किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े और कोरोना महामारी के चलते जारी हिदायतों का भी सही तरीके से पालन हो सके। सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले

सेनेटाइज कराया जाएगा। इसके अलावा सभी परीक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की ओर से ही परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर हाथ सेनेटाइज करवाने के बाद फेस मास्क मुहैया करवाए जाएंगे, ताकि कोरोना के खतरे से निपटने के [illegible] बरती जा सके। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर एक बजे तक आयोजित की जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक जागरण.....

दिनांक 20.10.2020...पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....4-5.....

ईमानदारी से काम करें तो वायु प्रदूषण से निपट सकते हैं : आरओ भोसले

जागरण संवाददाता, हिसार : राइट-टू क्लीन एयर संस्था के द्वारा बहुत चर्चित विषय फसल अवशेषों को जलाने से होने वाले प्रदूषण पर एक ऑनलाइन वेबिनार फसल अवशेष को जलाना कारण और निवारण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कृषि विशेषज्ञों, हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी और किसानों सहित 30 से अधिक व्यक्तियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए संचालिका डा. सुनीता श्योकंद ने कहा कि दिन-प्रतिदिन वायु प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, जो चिंताजनक है। उन्होंने प्रदूषण से होने वाले नुकसान

पर्यावरण संरक्षण

- दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा वायु प्रदूषण हानिकारक
- पराली में नाइट्रोज, फास्फोरस और कार्बनिक पदार्थ की अधिकता

के बारे में बताते हुए कहा कि कोविड-19 के समय में वायु प्रदूषण से दुष्परिणाम और भी बढ़ गए हैं।

हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी आरओ भोसले ने वायु प्रदूषण के प्रमुख कारणों और उसके मानव पर पड़ रहे दुष्प्रभाव के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि ईमानदारी से ऐसे प्रयास करें जिससे कि वायु प्रदूषण की समस्या से निपटा जा सके।

कार्यक्रम में कृषि अभियंत्रिकी महाविद्यालय, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के विज्ञानी डा. मुकेश जैन ने कहा के धान की कटाई के पश्चात गेहूं की फसल की बुवाई के बीच का अंतराल कम होने की वजह से और खेतों को जल्दी खाली करने के लिए किसान कई बार पराली में आग लगा देते हैं, जोकि उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि पराली में काफी मात्रा में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश और कार्बनिक पदार्थ होते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक जागरण

दिनांक 20.10.2020 पृष्ठ संख्या 3 कॉलम 1-4

मौसम 24 अक्टूबर तक मौसम परिवर्तनशील, तापमान में और गिरावट की संभावना

सामान्य से पांच डिग्री गिरा रात का तापमान

जागरण संवाददाता, हिसार : मौसम में लगातार परिवर्तन हो रहा है। सोमवार को रात्रि तापमान में सामान्य से पांच डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई है। इतनी गिरावट से रात्रि तापमान 12.7 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया है। वहीं अधिकतम तापमान 35 डिग्री सेल्सियस पर बना हुआ है।

एचएयू के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. मदन खीचड़ ने बताया कि राज्य में 24 अक्टूबर तक मौसम आमतौर पर परिवर्तनशील रहने की संभावना है। हवा में बदलाव -पूर्वी से उत्तर पश्चिमी हवाएं चलने की संभावना को देखते हुए तापमान में हल्की गिरावट संभावित है। इस दौरान अधिकतम तापमान 31 से 34 डिग्री व न्यूनतम तापमान 10 से 13 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।

आंकड़े

- 12.7 डिग्री सेल्सियस पर पहुंचा रात का तापमान
- अधिकतम तापमान 35 डिग्री सेल्सियस पर ही स्थिर

पिछले दिनों में हिसार का तापमान

तारीख-	अधिकतम-	न्यूनतम
13 अक्टूबर-	36.5-	15.6
14 अक्टूबर-	36.1-	16.4
15 अक्टूबर-	35.8-	16.4
16 अक्टूबर-	34.5-	14.4
17 अक्टूबर-	35.3-	14.7
18 अक्टूबर-	35-	14.2
19 अक्टूबर-	35-	12.7

किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह

सरसों : सरसों की बिजाई उन्नत किस्मों आरएच 725, आरएच 749, आरएच 30, आर एच 406 आदि के प्रमाणित बीजों से करें। बिजाई से पहले 2 ग्राम कारबेन्डाजिम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से अवश्य उपचारित करें।

गेहूं : गेहूं की बिजाई के लिए अगेती बिजाई वाली उन्नत किस्मों के बीजों का प्रबंध करे व खाली खेतों को अच्छी प्रकार से तैयार करें, ताकि अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में तापमान अनुकूल होने पर अगेती बिजाई शुरू की जा सके। अगेती बिजाई के लिए यदि अच्छा पानी उपलब्ध हो तो डब्ल्यूएच 1105, एच डी 2967, एचडी 3086 व डब्ल्यू एच 711 किस्मों का प्रयोग करें। यदि कम पानी उपलब्ध हो तो अगेती बिजाई के लिए सी 306, डब्ल्यूएच 1080 , डब्ल्यूएच 1142 किस्मों के प्रयोग किया जा सकता है।

देसी चना : देसी चने की बिजाई के लिए खेत को अच्छी प्रकार से तैयार करें तथा उन्नत किस्मों के साथ बिजाई शुरू करें। देसी चने की उन्नत किस्मों बारानी व सिंचित क्षेत्रों के लिए एचसी 1 तथा सिंचित क्षेत्रों के लिए एचसी 3 (मोटे दाने वाली किस्म) व एचसी 5 किस्मों का प्रयोग करे। बिजाई से पहले बीज का राइजोबियम के टीके से उपचार करें इस उपचार से जड़ों में ग्रन्थियां अच्छी बनती हैं।

सब्जियां व फल : मौसम परिवर्तनशील व खुश्क रहने की संभावना देखते हुए सब्जियों व फलदार पौधों तथा हरे चारे की फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम .... दैनिक भास्कर ....

दिनांक 20.10.2020 पृष्ठ संख्या ....1.... कॉलम ....1-2....

न्यूनतम तापमान सामान्य से पांच डिग्री कम, रातें हुईं ठंडी

भास्कर न्यूज | हिसार

मौसम ने करवट लेनी शुरू कर दी है। रात के तापमान में लगातार गिरावट हो रही है। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार रात का तापमान सामान्य से 5 डिग्री सेल्सियस नीचे चला गया है। अधिकतम तापमान सामान्य से 1 डिग्री अधिक था। मौसम विभाग ने संभावना जताई है कि अब तापमान में और गिरावट आएगी। सोमवार को दिन का तापमान 35.0 डिग्री दर्ज किया गया। न्यूनतम तापमान 12.7 डिग्री दर्ज किया।

पूर्वानुमानः 24 तक मौसम परिवर्तनशील रहेगा

एचएयू के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार हरियाणा में 24 अक्टूबर तक मौसम आमतौर पर परिवर्तनशील परंतु खुश्क रहने की संभावना है। हवा में बदलाव-पूर्वी से उत्तर-पश्चिमी हवाएं चलने की संभावना को देखते हुए तापमान में हल्की गिरावट की संभावना रहेगी। अधिकतम तापमान 31 से 34 डिग्री व न्यूनतम 10 से 13 डिग्री के आसपास रहने की संभावना है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....The Tribune.....

दिनांक 19.10.2020.....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....7-8.....

VIRTUAL AGRICULTURE FAIR

Hisar: In the first session of the second day of the virtual agriculture fair of Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, various webinars were organised. The first webinar gave information about the direct sowing of paddy, in the second webinar, the topics were related to disease and its prevention in milch animals and the third webinar was regarding increasing the yield of rabi crops, etc. Giving information here on Friday, a spokesperson of the university said in this webinar, Dr SS Poonia talked about the direct sowing of paddy, which was proving very effective and that the state government's plan 'Mera Pani Meri Virasat' was also proving worthwhile. He said that this not only saved water, but also reduced the cost of pumping.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Top story	**19.10.2020**	Online	--

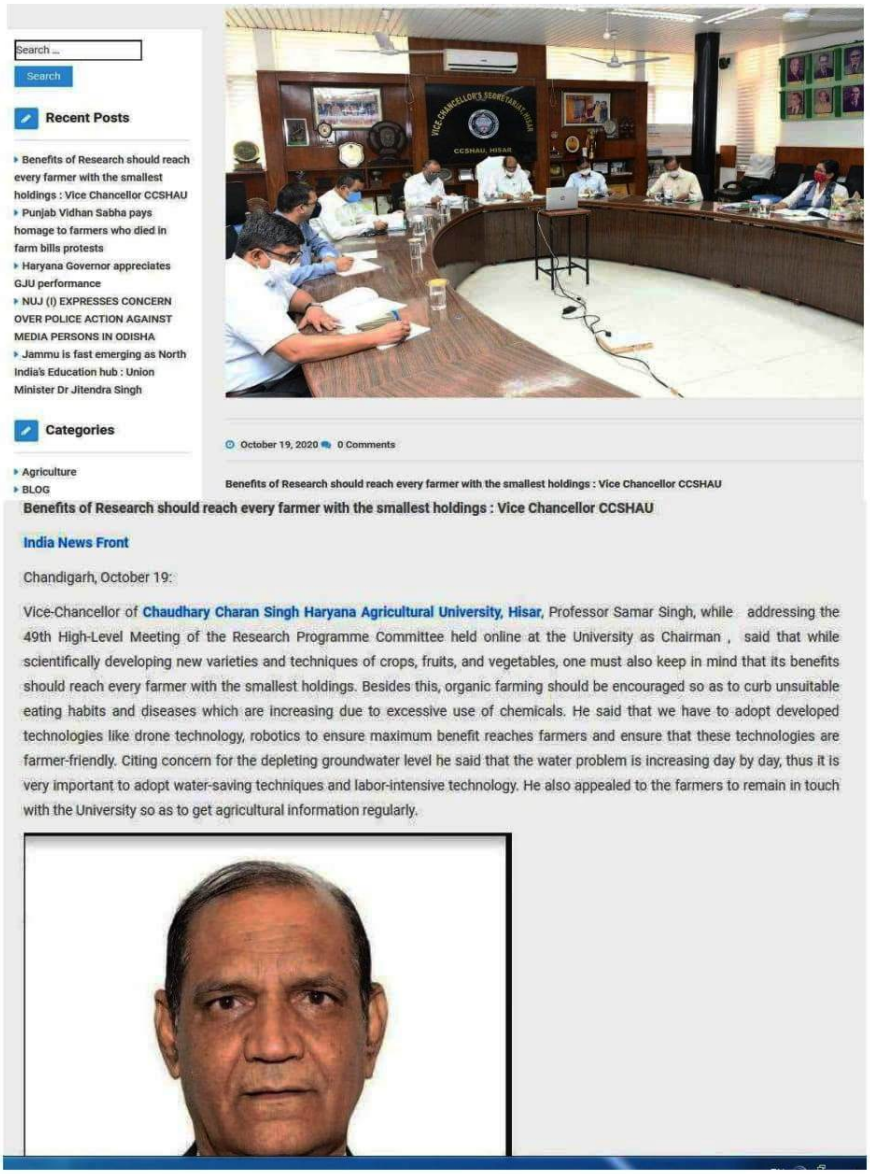

Search ...

Search

Recent Posts

- Benefits of Research should reach every farmer with the smallest holdings : Vice Chancellor CCSHAU
- Punjab Vidhan Sabha pays homage to farmers who died in farm bills protests
- Haryana Governor appreciates GJU performance
- NUJ (I) EXPRESSES CONCERN OVER POLICE ACTION AGAINST MEDIA PERSONS IN ODISHA
- Jammu is fast emerging as North India's Education hub : Union Minister Dr Jitendra Singh

Categories

- Agriculture
- BLOG

October 19, 2020 0 Comments

Benefits of Research should reach every farmer with the smallest holdings : Vice Chancellor CCSHAU

Benefits of Research should reach every farmer with the smallest holdings : Vice Chancellor CCSHAU

India News Front

Chandigarh, October 19:

Vice-Chancellor of **Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, Hisar**, Professor Samar Singh, while addressing the 49th High-Level Meeting of the Research Programme Committee held online at the University as Chairman , said that while scientifically developing new varieties and techniques of crops, fruits, and vegetables, one must also keep in mind that its benefits should reach every farmer with the smallest holdings. Besides this, organic farming should be encouraged so as to curb unsuitable eating habits and diseases which are increasing due to excessive use of chemicals. He said that we have to adopt developed technologies like drone technology, robotics to ensure maximum benefit reaches farmers and ensure that these technologies are farmer-friendly. Citing concern for the depleting groundwater level he said that the water problem is increasing day by day, thus it is very important to adopt water-saving techniques and labor-intensive technology. He also appealed to the farmers to remain in touch with the University so as to get agricultural information regularly.